Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

भारतीयवेदान्तदर्शन और वाचस्पतिमिश्र

डॉ.दिनेशकुमारझा
ग्रा.पो. अंधराठाढी, जि. मधुबनी,
बिहार, भारत।

सारांश – भामती रचना का एक और रहस्यपूर्ण उद्देश्य ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य और मण्डनमिश्र विरचित वेदान्त के अनुपम ग्रन्थ "ब्रह्मसिद्धि तथा शांकरभाष्य की व्याख्या भामती का सूक्ष्मदृष्टि से अवलोकन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि शंकराचार्य और मण्डन मिश्र के दो विभिन्न वेदान्त प्रस्थानों में सामंजस्य लाने के लिये वाचस्पति मिश्र ने भामती की रचना की।

मुख्य शब्द – भारतीय, वेदान्तदर्शन, वाचस्पतिमिश्र, शंकराचार्य, मण्डन मिश्र, ब्रह्मसिद्धि।

जीवन पर नियमबद्ध- पद्धति से विचार कर उसका वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करने वाले शास्त्र को दर्शनशास्त्र कहते है। मानव-जीवन संसार की अन्यान्य वस्तुओं से सम्बद्ध है। अत: इस विराट ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म से सूक्ष्मतम रहस्यों का बुद्धि के द्वारा विश्लेषण कर उसमें मनुष्य का स्थान निर्णय करना दर्शन शास्त्र का कार्य है। विश्व के वैचित्र्यमय विशाल रङ्गमंच पर हास्य-रुदन के अभिनेता मानव का विश्व ब्रह्माण्ड के दृष्टिकोण से क्या महत्व है, इसका समुचित समाधान दार्शनिकों के उर्वर मस्तिष्क के द्वारा प्राप्त होता है। दर्शनशास्त्र के द्वारा सुचिन्तित आध्यात्मिक तथ्यों के ऊपर ही भरतीय धर्म की दृढं प्रतिष्ठा हुई है। इसीलिये यहाँ दर्शन की लोकप्रियता अन्यदेशों से अधिक है।

प्राचीनता, सूक्ष्म निरीक्षणशक्ति गम्भीरशैली युक्तिपूर्ण परिष्कृत तर्कपद्धति और विशालता की दृष्टि से भारतीय दर्शनों का स्थान विश्वसाहित्य में अद्वितीय है।

हमारे तप:भूत ऋषियों के उज्ज्वल एवं उदार अन्त:करण में जिन अखण्ड अविनाशी सत्यों का अनुभव हआ था वे ही वेद की ऋचाओं के रूप में विद्यमान है। इसीकारण वेद नियम-रूप में प्रमाण माने जाते है। और निगमप्रमाण्य ही भारतीयदर्शन का प्रधान वैशिष्ट्य है।

औपनिषद–तत्त्वज्ञान का चरमसिद्धान्त 'तत्त्वमसि' महावाक्य ही भारतीय– आस्तिक दर्शनों का बीज है और त्वम् (जीव) तथा तत् (ब्रह्म) पदार्थो की आत्यन्तिक एकता के कारण इस तत्त्व के साक्षात्कार की समस्या को सुलझाने के लिये ही भारतीय मेधावी मनीषियों ने विविध प्रकार से तत्त्व का विवेचन कर दर्शनसमहों को विकसित एवं सुसज्जित किया है।

वाचस्पति मिश्र ने अपनी प्रौढ–टीकाओं से प्राय: सभी दर्शनों को सुदृढ़ किया है, किन्तु 'भामती' के कारण दार्शनिक जगत् में उनकी कीर्ति अमर है। 'भामती' ब्रह्मसूत्र के शांकरभाष्य की भव्यटीका है। जिसमें उन की विलक्षण प्रतिभा का चमत्कार पद पद मे परिलक्षित होता है। यह उनकी सर्वोच्च और सब से अन्तिम अमरकीर्ति है। अद्वैत वेदान्त के रहस्यो तथा आचार्यशंकर के मत को समझने के लिये भामती का अध्ययन अनिवार्य है।

वेद के अन्तिम भाग को वेदान्त या उपनिषद् कहते हैं। उपनिषद् के मन्त्रें को सरलता से समझाने के लिए भगवान् वेदव्यास ने सूत्र बनाये। व्यास सूत्र पर उपलब्ध सभी भाष्यों में प्रतीक एवं प्रतिष्ठित शांकरभाष्य है। उस शांकरभाष्य की सर्वाधिक विख्यात व्याख्या भामती है।

भामती न केवल शांकरभाष्य के रहस्य को अनुपम प्रणाली से समुद्घाटित करती है, अपि तु विरोधियों के मतों का खण्डन करने के हेतु, एवं स्वशास्त्रीय सिद्धान्त निरूपण के लिए स्वतन्त्र विचार भी उपस्थित करती है। इसलिए वेदान्त में भामती की अपनी स्वतन्त्र सत्ता है।

"भामती की महता के सम्बन्ध में भामती के महान् व्याख्याकार कल्पतरुकार अपनी व्याख्या के अन्त में लिखते हैं।

न केवलं ग्रन्थव्याख्या मात्रमत्र कृतम् अपितु तत्र तत्र बौद्धादिविरुद्धसिन्ताभङ्ग स्वातन्त्र्येण नयमरीचिभि: कुर्वता जगतामबोधोऽपनिन्ये ब्रह्मबोधश्च स्थिरीचक्रे। अर्थात् वाचस्पति मिश्र महानुभाव ने भामती में केवल शांकरभाष्य की व्याख्या ही नहीं की अपितु जगह– जगह मौलिक युक्ति किरणों से बौद्धवादियों के मतों का खण्डन करते हुए संसार की अज्ञानता दूर की तथा ब्रह्मज्ञान की स्थिरता लाई। कल्पतरुकार ने जिस तथ्य पर प्रकाश दिया है उसका संकेत वाचस्पति मिश्र के शिष्य सनातन ने एक श्लोक में किया है। अपनी इस शिष्य के आग्रह से वाचस्पति ने उस श्लोक को भामती में ही स्थापित कर दिया।

शङ्के सम्प्रति निर्विशङ्कमधुना स्वराज्यसौख्यं वहन्नेन्द्र: सान्द्रतप:स्थितेषु कथमप्युद्वेगमभ्येष्यति। यद् वाचस्पतिमिश्रनिर्मितमितव्याख्यानमात्रस्फुटद् वेदान्तार्थविवेकविंचतभवा: स्वगेप्यमी नि:स्पृहा।

सनातन मिश्र का कहना है कि मैं अनुमान करता हूँ कि अब स्वर्ग के राज्यसुख का उपभोग करते हुये इन्द्र उँची तपस्या में स्थित तपस्वियों से उद्विग्न नहीं होगे। क्योंकि वाचस्पतिमिश्र निर्मित व्याख्यानमात्र से प्रस्फुटित हुए वेदान्त के अर्थ के विवेक से संसार को तिरस्कृत करने वाले ये स्वर्ग के लिए भी निर्लोभ हैं।

महापण्डित राहुलसांकृत्यायन ने तो – "बौद्ध धर्म का उत्थान और पतन नाम की छोटी सी पुस्तिका में यहाँ तक लिखा है कि शांकरभाष्य पर यदि भामती नहीं लिखी गई होती तो शांकरभाय उपेक्षित और विलुप्त हो जाता। और

उन्होंने यह भी लिखा है कि उत्तरभारत की दार्शनिक भूमि मिथिला के सर्वशास्त्र निष्णात वाचस्पति मिश्र ने जब तक शांकरवेदान्त का समर्थन नहीं किया, तब तक शंकर उत्तर भारत में आचार्य नहीं माने गए।

शांकरभाष्य की सशक्त बनाने के लिए ही भामती नहीं लिखी गई अपितु श्रुतिसागर के मंथन से ब्रह्मामृत अविष्कृत करने के लिए भी जैसा कि भामती के उपसंहार में वाचस्पति मिश्र ने कहा है–

भङ्क्त्वा वाद्यसुरेन्द्रवृन्दमखिविद्योप धानातिगं

येनाम्नायपयोनिधेर्नयमथा ब्रह्बमामृतं प्राप्यते।

सोऽयं शाङ्करभाष्यजातविषयो वाचस्पतेः सादरम्

सन्दर्भः परिभाव्यतां सुमतयः स्वार्थेषु को मत्सरः।। (भामती)

कल्पतरुकार ने भी भामती के प्रारम्भ में लिखा है–

वैदिकमार्गं वाचस्पतिरपि सम्यक् सुरक्षितं चक्रे।

नयविजितवादिदेत्यः स जयति विबधेश्वराचार्यः।।

अर्थात् वाचस्पति ने भी अच्छी तरह से वैदिकमार्ग की सुरक्षा की।

भामती रचना का एक और रहस्यपूर्ण उद्देश्य ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य और मण्डनमिश्र विरचित वेदान्त के अनुपम ग्रन्थ "ब्रह्मसिद्धि तथा शांकरभाष्य की व्याख्या भामती का सूक्ष्मदृष्टि से अवलोकन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि शंकराचार्य और मण्डन मिश्र के दो विभिन्न वेदान्त प्रस्थानों में सामंजस्य लाने के लिये वाचस्पति मिश्र ने भामती की रचना की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. ब्रह्बसूत्र शाङ्करभाष्यम्– श्रीवाचस्पतिमिश्र प्रणीत भामती स्वामीयोगीन्द्रानन्द कृत चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी।
2. भामती कल्पतरु टीका, अमलानन्द सरस्वती, बम्बई निर्णय सागर प्रेस।
3. भामती, परिमलटीका, अप्पयदीक्षित, बम्बई निर्णय सागर प्रेस।
4. भामती, प्रकाश एवं विकाश टीका– लक्ष्मीनाथ झा, बम्बई निर्णय सागर प्रेस।
5. बौद्धधर्म का उत्थान एवं पतन– राहुल सांकृत्यायन, सार नाथ ।
6. मण्डन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त– पं. सहदेव झा, मण्डन सन्तति, महिषी, सहरसा बिहार।